Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2160–2166

ANALYTICAL STUDY OF ADJUSTMENT IN BTC AND SPECIAL BTC TRAINED TEACHERS WORKING AT PREPARATORY STAGE

प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों में समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Gajendra Singh [1], Rajkumari Gola [2]

[1] Research Student, Department of Education, IFTM University Moradabad
[2] Assistant Professor, Department of Education, IFTM University Moradabad

Corresponding Author
Gajendra Singh,

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5101

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: It is only through education that any person's all-round development takes place, he develops the society and the country by becoming a useful member of the society. Primary education is the foundation stone of making a child civilized, well-cultured, without strengthening it, the desired society cannot be achieved, therefore, there is always pressure on the leaders of the society and the country, how to organize this level of education so that the expected results can be achieved and the nursery being prepared for the needs of the society and the country can be given the right direction so that they can become a capable member for the society and the country and can make their important contribution in the upliftment of the country and human society. For all this, it is necessary that such arrangements be made according to the changing times so that they are ready to receive education, they receive education with entertainment, they feel good in coming to school and staying there, this can happen only when the things prevalent in the society are available in the school so that the environment there does not seem different to them which is boring with their lifestyle. Rousseau says, 'We cannot learn anything from such a student whom we hate. Children should not only come to school but also stay there regularly till school hours and happily absorb the information given on various subjects in a better way. Various commissions have emphasized from time to time that the stay of children in school should be increased. Various efforts have been made for all this. To make teaching interesting and comprehensible, emphasis has been laid on the adjustment of teachers in this field. Key words: Preparatory stage, job satisfaction, influence, teacher. Introduction: - Education is the basic foundation of human development. It is through this that the development of individuals, society and nation takes place. In fact, it helps a person to achieve all that he is capable of and aspires for. It is difficult to limit its functions. We all are aware of the fact that mental development is directly related to thoughts and thoughts to language, the development of language and thoughts is possible only through education. Education develops many mental powers such as memory, observation, imagination, logic and discretion. According to Kant (Saxena and Chaturvedi, 2004, p. 10), "Education is the development of that perfection of a person which he is capable of." Education makes a person optimistic by freeing him from despair, and self-confident by freeing him from inferiority, making him worth living. "Education is that source of knowledge, through which the darkness of ignorance is destroyed automatically." It is said that education removes inertia and makes life excellent. Education acts as a life-giver in life. Only after acquiring education, a person remains engaged in the perfection of life. Education is one of the most important needs of life. The process of education involves three elements. Teacher, learner and curriculum. The teacher tries to develop the desired qualities in the students through the curriculum. In the absence of capable, committed and dedicated teachers, even the best education system is bound to fail. Perhaps that is why it seems difficult, if not impossible, to imagine education without a teacher. In the Vedic period, there were Rishis, Gurus and teachers. In the society, the Guru had the status of God. But now the conditions have changed, however, the importance of the teacher in the education system cannot be denied. Even today, he is the source of knowledge for the child, through which the child acquires not only spiritual but also worldly and practical knowledge.

Hindi: शिक्षा के द्वारा ही किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, वह समाजोपयोगी सदस्य बनकर समाज व देष का विकास करता है। प्राथमिक शिक्षा बच्चे को सभ्य, सुसंस्कृत बनाने की आधार शिला है, इसको मजबूती प्रदान किये बिना वांछित समाज की प्राप्ति नहीं की जा सकती इसलिए समाज एवं देष के कर्णधारों के ऊपर सदैव ही यह दबाव बना रहता है,

कि इस स्तर की शिक्षा को किस प्रकार से व्यवस्थित किया जाए जिससे अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकें और समाज एवं देश की जरूरतों के लिए तैयार हो रही नर्सरी को सही दिशा प्रदान की जा सके जिससे कि वे आगे चलकर समाज एवं देष के लिए सुयोग्य सदस्य बनकर देश एवं मानव समाज के उत्थान में अपना अहम योगदान दे सकें। इस सब के लिए आवश्यक है कि बदलते समय के अनुसार ऐसी व्यवस्था की जाये जिससे वे शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार हों, वे मनोरंजन के साथ शिक्षा ग्रहण करें उन्हें विद्यालय आने एवं रूकने में अच्छा महसूस हो, ऐसा तभी हो सकता है जब समाज में प्रचलित वस्तुयें विद्यालय में उपलब्ध हों जिससे वहां का वातावरण उन्हें अलग तरीके का न लगे जो उनकी जीवन शैली से उबाऊ हो। रूसो कहते हैं, ‘ऐसे पाठक से हम कुछ नहीं सीख सकते जिससे हम घृणा करते हों। बच्चे सिर्फ विद्यालय आएं ही नहीं बल्कि नियमित रूप से विद्यालय समय तक वहाँ रूकें भी और खुशी-खुशी विभिन्न विषयों के विषय में करायी जाने बाली जानकारी को बेहतर तरीके से आत्मसात करें। विभिन्न आयोगों ने समय-समय पर इस बात पर जोर दिया है कि विद्यालय में बच्चों का ठहराव बढ़ाया जाये। इस सबके लिए विभिन्न प्रकार से प्रयास किये जाते रहे हैं। शिक्षण को रूचिकर एवं बोधगम्य बनाने के लिए इस क्षेत्र में शिक्षकों के समायोजन पर बल दिया गया है।

Keywords: Preparatory Stage, Job Satisfaction, Influence, Teachers, प्रिपेरेटरी स्टेज, कार्य संतुष्टि, प्रभाव, शिक्षक

1. प्रस्तावना

मानव के विकास का मूल आधार शिक्षा है। इसके द्वारा ही व्यक्तिए समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। वास्तव में यह, वह सब प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करती है, जिसके वह योग्य होता है और जिसकी वह आकांक्षा रखता है। इसके कार्यो को सीमा में बांधना कठिन है। हम सभी इस तथ्य से भिज्ञ हैं कि मानसिक विकास का सीधा सम्बन्ध विचारों से होता है और विचारों का भाषा से, भाषा और विचारों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव होता है। शिक्षा अनेक मानसिक शक्तियों जैसे स्मृति, निरीक्षण, कल्पना, तर्क और विवेक का विकास करती है। कॉण्ट (सक्सेना और चर्तुवेदी, 2004, पृ0-10) के अनुसार ’’शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है।’’ शिक्षा मनुष्य को निराशा से मुक्त करके आशावादी बनाती है, और हीनता से मुक्त करके आत्म विष्वासी, जीवन जीने योग्य बनाती है। ’’शिक्षा ज्ञान पुंज का वह श्रोत है, जिसके माध्यम से अज्ञानरूपी अंधकार स्वतः ही नष्ट हो जाता है।श् कहा जाता है कि शिक्षा से जड़ता दूर होती है और जीवन उत्कृष्ट बनता है। विद्या जीवन में संजीवनी का कार्य करती है। विद्यार्जन के उपरान्त ही व्यक्ति जीवन की पूर्णता के प्रति संलग्न रहता है। जीवन की सर्वोपरि आवश्यकताओं में से शिक्षा एक है। शिक्षा की प्रक्रिया में तीन तत्व सम्मिलित होते हैं। शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम। शिक्षक पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में वांछित गुणों के विकास का प्रयास करता है। योग्य, प्रतिबद्ध तथा समर्पित शिक्षकों के अभाव में अच्छी से अच्छी शिक्षा व्यवस्था का असफल होना अवश्यम्भावी है। सम्भवतः इसीलिए शिक्षक के बिना शिक्षा की कल्पना करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य प्रतीत होता है। वैदिक काल में ऋषि, गुरु, शिक्षक होते थे। समाज में गुरु को ईष्वर का दर्जा प्राप्त था। किन्तु अब स्थितियां बदली है तथापि शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता। वह आज भी बालक के ज्ञान प्राप्ति का श्रोत है, जिससे बालक न केवल आध्यात्मिक अपितु सांसारिक व व्यावहारिक ज्ञान भी अर्जित करता है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा की समुचित व्यवस्था पर निर्भर करती है। मानव कुछ मूल प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है। शिक्षा द्वारा इन मूल प्रवृत्तियों का परिषोधन एवं परिमार्जन होता है। शिक्षा द्वारा प्राप्त संस्कार हमें सदाषयी, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा शक्तिमान बनाते हैं। यह सत्य है कि विद्यालय का पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें निर्देशन कार्यक्रम पाठ्य पुस्तकें आदि सभी वस्तुएं शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परन्तु जब तक उसमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नही की जायेगी, तब तक वे निरर्थक रहेगी। सम्भवतः इसीलिए शिक्षक के कार्य को सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य माना गया है। समायोजन की प्रक्रिया अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व शारीरिक कारकों पर निर्भर करती है यथा घर का वातावरण, सामाजिक आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, संवेगात्मक आवश्यकतायें आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई शैक्षणिक संरचना के तहत, एनईपी ने स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना को बदलने का प्रस्ताव दिया है ताकि इसे बच्चों के विकास के विभिन्न चरणों में विकासात्मक जरूरतों और हितों के लिए अधिक उत्तरदायी और प्रासंगिक बनाया जा सके। नई 5+3+3+4 संरचना जो पारंपरिक 10+2 संरचना को बदल देगी। एनईपी 2020, में नई शैक्षणिक संरचना को तहत विभिन्न चरणों में विभक्त किया गया है :-

1) फाउंडेशन स्टेज (निर्माण चरण) ग्रेड प्री-प्राइमरी से 2 तक,
2) प्रारंभिक चरण (प्रारंभिक चरण) ग्रेड 3 से 5 तक,
3) मिडिल स्टेज (मध्य चरण) ग्रेड 6 से 8 तक,
4) हाई स्कूल स्टेज (माध्यमिक चरण) ग्रेड 9 से 12 तक,

एनईपी 2020 में फाउंडेशन स्टेज (निर्माण चरण) वह चरण है जो ग्रेड प्री-प्राइमरी से 2 तक को कवर करता है, जिसमें अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, टीमवर्क और सहयोग आदि पर ध्यान देने के साथ खेल व अन्य गतिविधियों पर आधारित शिक्षा शामिल होता है। एनईपी 2020 में प्रिपरेटरी स्टेज (प्रारंभिक चरण) वह है जो ग्रेड 3 से 5 तक (आयु समूह 8-11 वर्ष) को कवर करता है, धीरे-धीरे खेल-

आधारित शिक्षा से अधिक औपचारिक लेकिन इंटरैक्टिव कक्षा सीखने में परिवर्तित हो जाएगा। यह पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित सहित सभी विषयों में एक ठोस आधार तैयार करेगा। एनईपी 2020 में मिडिल स्टेज (मध्य चरण) वह है जो ग्रेड 6 से 8 तक को कवर करता है, विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी जैसे विषयों में विषय सीखने और अधिक अमूर्त अवधारणाओं की चर्चा पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। एनईपी 2020 में हाई स्कूल स्टेज (माध्यमिक चरण) जिसमें ग्रेड 9 से 12 तक शामिल हैं, जिसमें चार साल का बहु-विषयक अध्ययन शामिल होगा, विषय उन्मुख शैली पर निर्माण लेकिन अधिक गहराई, अधिक महत्वपूर्ण सोच, जीवन आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान, और अधिक लचीलापन और छात्र की पसंद होगा।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से समाज में षिक्षा किसी न किसी रुप में विद्यमान रही है, तथा शिक्षा कि प्रक्रिया में षिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। षिक्षा की प्रक्रिया में षिक्षक ही वह व्यक्ति है जो शिक्षा को प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से सबसे अधिक प्रभावित करता है। शिक्षकों से ही यह आषा की जाती है कि वे अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से छात्रों में समाज सम्मत उत्तम गुणों का विकास करने में सफल होगें। परन्तु वर्तमान में समाज में लोगों द्वारा जिस प्रकार का व्यवहार किया जा रहा है, उससे ऐसा लगता है कि शिक्षक अपनी भूमिका का सही तरीके से निर्वाह करने में सफल नही हो पा रहे हैं। फलतः समाज में शिक्षकों के सम्मान में भी गिरावट आयी है, आरै शिक्षकों के सम्मान में कमी से कहीं न कहीं शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है। वर्तमान समय में सरकारी प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों की स्थिति अत्याधिक दयनीय प्रतीत होती है। फलतः आज प्रत्येक गांव व नगर में निजी प्राथमिक विद्यालयों की बाढ़ सी आ गयी है। इन निजी प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों के खुलने का कारण सरकारी विद्यालयों के अभाव से कहीं अधिक, सरकारी विद्यालयों की दशा एवं इन विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या तथा इन विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा है। वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा बी.एड., बी.पी.एड., सी.पी.एड., डी.पी.एड., एल.टी डिग्री धारक व्यक्तियों का शिक्षक के रूप में चयन करने के उपरान्त विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण देकर इन्हें प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में नियुक्ति प्रदान की गयी है। परन्तु जब तक शिक्षक अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगा, अपनी भूमिका से संतुष्ट नही होगा और अपने को प्रभावषाली सिद्ध नही करेगा, तब तक वह शिक्षक के रुप में अपने दायित्वों का सुचारु रूप से निर्वाह नही कर पायेगा। मात्र एक व्यवसाय के रूप में अल्प प्रशिक्षण प्राप्त कर कोई व्यक्ति प्रभावशाली शिक्षक नहीं बन सकता। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन दर्शन होता है किन्तु यह मानना तर्क संगत होगा कि वह अपने द्वारा किये गये कार्य के प्रति, संतोष की एक निश्चित न्यूनतम मात्रा का अधिकारी है। मनुष्य की आवश्यकतायें असीम हैं तथा हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव नहीं है। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर व्यक्ति तनाव में होता है। इस तनाव से मुक्ति के लिए व्यक्ति अपने पर्यावरण से सम्बन्ध समरस करने का प्रयास करता है। वह सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों तथा आदर्शों के अनुकूल व्यवहार करने का प्रयास करता है, जिससे उसे समाज में सम्मान प्राप्त हो सके।

3. शोध समस्या कथन

‘‘प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों में समायोजन का विष्लेषणात्मक अध्ययन।’

4. शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रिपेरेटरी स्टेजः प्रस्तुत अध्ययन में प्रिपेरेटरी स्टेज विद्यालयों से तात्पर्य बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर-प्रदेश द्वारा संचालित के उन सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों से है, जो कक्षा 3 से 5 तक की शिक्षा का सम्पादन करते है।

बी.टी.सी. शिक्षकः प्रस्तुत अध्ययन में बी.टी.सी. शिक्षकों से आषय सत्र 2023 एवं 2024 में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन शिक्षकों से है,जिन्हांने उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार द्विवर्षीय प्राथमिक शिक्षक-प्रमाण पत्र (बेसिक टीचर सर्टिफिकेट) प्राप्त किया है।

विशिष्ट बी.टी.सी.: प्रस्तुत अध्ययन में विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है, जो बी.एड., बी.पी.एड., सी.पी.एड., डी.पी.एड, एल.टी. उपाधि धारक है और 6 माह का विशिष्ट प्राथमिक शिक्षक प्रमाण पत्र (बेसिक टीचर सर्टिफिकेट) प्राप्त किया है।

समायोजनः समायोजन दो शब्दो से मिलकर बना है सम और आयोजन। सम का अर्थ है भली भांति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतः समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढगं से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएं पूरी हो जाएं मानसिक द्वन्द न उत्पन्न होने पाए। समायोजन से अभिप्राय व्यक्ति के मात्र व्यवहार से नही है, अपितु वातावरण के साथ उसके समायोजन से भी है। यह उद्दीपक के प्रति प्रतिक्रिया करने का ढंग है। सामान्यतः समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन

या अनुकूलन भी कहते है। प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से अभिप्राय शिक्षकों का प्राथमिक कक्षाआं में षिक्षण कार्य, अपने साथियों एवं विद्यालयी वातावरण के प्रति समायोजन से है।

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया हैं-

1) प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2) शहरी/ग्रामीण प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण करने के पश्चात निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया हैं-

1) प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अन्तर नही है।
2) लिगं के आधार पर प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालय में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अन्तर नही है।

7. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन निम्नांकित रूप में किया गया है-

1) प्रस्तुत अध्ययन में केवल मुरादबारद जनपद को सम्मिलित किया गया है।
2) प्रस्तुत अध्ययन में बेसिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा संचालित प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3) प्रस्तुत अध्ययन में सत्र 2022-23 में कार्यरत शिक्षक ही सम्मिलित हैं।
4) प्रस्तुत अध्ययन में बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला और पुरुष दोनों ही शिक्षक सम्मिलित हैं।

8. शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कृत्य संतोष अध्ययन करना था। अतः इस अध्ययन हेतु शोध की वर्णनात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया है।

9. शोध अध्ययन की जनसंख्या, प्रतिचयन एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के प्रिपेरेटरी स्टेज के (परिषदीय प्राथमिक) विद्यालयों में कार्यरत समस्त बी.टी.सी. व विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है। न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम शोधार्थी ने मुरादबाद जिले के प्रिपेरेटरी स्टेज के (परिषदीय प्राथमिक) विद्ययालयों की सूची बेसिक शिक्षा अधिकारी, के कार्यालय से प्राप्त की।

10.शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

1) अध्यापक समायोजन परिसूची, श्रीमती रश्मि ओझा।
2) व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र (स्वनिर्मित)।

11.आंकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी

आंकड़ों के संकलन के पश्चात प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी-टेस्ट एवं एफ-टेस्ट का प्रयोग कर के किया गया।

12.प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप आंकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीयन करके प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उनकी व्याख्या की जाती है।

परिकल्पना-1 प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अन्तर नही है। इस परिकल्पना की जांच के लिए टी-टेस्ट सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या-1 प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों की समायोजन

समूह	बी.टी.सी. शिक्षक	विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	टी- मान	सार्थक स्तर
संख्या	241	258	15-29	0-01
मध्यमान	29-52	25-85		
मानक विचलन	5-41	5-64		

तालिका सं0-1 में प्रदर्शित सांख्यिकीय विष्लेषण में हम देख सकते हैं, कि बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान क्रमशः 29.52 एवं 25.85 तथा मानक विचलन क्रमषः 5.41 एवं 5.64 पाया गया। बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के ये दोनो ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे समायोजन का द्योतक हैं। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अधिक असमानता थी। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मान 15.29 पाया गया। यह टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनों समूहों के समायोजन में सार्थक अन्तर विद्यमान था। बी.टी.सी. शिक्षक, विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों से सार्थक रुप से अधिक समायोजित थे। डोंगा (1987) के अध्ययन में भी यह पाया गया कि जिन प्रशिक्षार्थी के पास प्राथमिक विद्यालय का अनुभव था वे अधिक समायोजित पाये गये। यहां पर बी.टी.सी. शिक्षकों का मध्यमान विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों से उच्च पाया गया। इस अध्ययन में विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन बी.टी.सी. शिक्षकों से कम होने का कारण अधिक योग्यता एवं उच्च प्रशिक्षण के पष्चात परिस्थितिवष उनका विशिष्ट बी.टी.सी. के प्रशिक्षणोपरान्त प्राथमिक विद्यालयों में नौकरी करना हो सकती है। विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों में से अधिकांश की नियुक्ति अधिकतर एकल अध्यापक वाले विद्यालय अथवा गांवों के विद्यालयों में हुई है फलतः उन्हें भौतिक सुख-सुविधाएं भी प्राप्त नही हो पाती है। तथा अपने शिक्षण कार्य से भी वे बी टी.सी. शिक्षकों की अपेक्षा कम संतुष्ट पाये गये है। सम्भवतः इन्ही कारणों से उनका समायोजन कम अच्छा पाया गया।।

परिकल्पना-2 लिगं के आधार पर प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालय में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अन्तर नही है। इस परिकल्पना की जांच के लिए टी-टेस्ट सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या-2 प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों का समायोजन

	समूह	बी.टी.सी. शिक्षक	विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	टी- मान	सार्थक स्तर
पुरूष	संख्या	158	153	7-65	0-01
	मध्यमान	29-27	26-13		
	मानक विचलन	5-32	5-91		
महिलाऐं	संख्या	83	105	7-23	
	मध्यमान	30-00	25-44		
	मानक विचलन	5-57	5-22		

तालिका सं0-2 में प्रदर्षित सांख्यिकीय विश्लेषण में हम देख सकते हैं, कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों के पुरुष बी.टी.सी. शिक्षकों एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 29.27 एवं 5.32 तथा 26.13 एवं 5.91 पाया गया। पुरुष बी.टी.सी. शिक्षक एंव विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन के ये दोनो ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे समायोजन के द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर विद्यालयों में कार्यरत पुरुष बी.टी.सी. शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मान 7.65, 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनो समूहों के समायोजन में सार्थक अन्तर विद्यमान है। पुरुष बी.टी.सी. शिक्षकों का समायोजन विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों के समायेजन से सार्थक रुप से अधिक पाया गया। महिला बी.टी.सी. शिक्षकों एवं महिला विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायेजन का मध्यमान एवं मानक विचलन 30.00 एंव 5.57 तथा 25.44 एवं 5.22 पाया गया। महिला बी.टी.सी. शिक्षक एवं महिला विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के प्राप्त ये दोनों ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे समायोजन को व्यक्त करते हैं। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर विद्यालयों में कार्यरत महिला बी.टी.सी. शिक्षकों की अपेक्षा महिला विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के समायोजन में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य टी-मान 7.23 पाया गया। यह टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनों समूहों के समायोजन में सार्थक अन्तर विद्यमान है। बी.टी.सी. महिला शिक्षकों का समायोजन विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के समायोजन से सार्थक रुप से अधिक पाया गया।

13.निष्कर्ष

प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान 29.52 एवं 25.85 पाया गया। यह दोनों ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे समायोजन का द्योतक है। दोनो वर्गो का मानक विचलन क्रमषः 5.41 एवं 5.64 पाया गया। मानक विचलन से ज्ञात होता है कि विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायेजन में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के समायोजन के मध्य टी.मान 15.29 पाया गया, यह टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इन दोनों समूहों के समायेजन के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. पुरुष एवं महिला तथा विशिष्ट बी टी.सी. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के समायेजन का मध्यमान क्रमशः 29.27 एवं 30.00 तथा 26.15 तथा 25.44 पाया गया। से सारे ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे समायोजन को दर्शातें है। बी.टी.सी. पुरुष एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष तथा बी.टी.सी. महिला एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के समायोजन का टी-मान क्रमशः 7.65 तथा 7.23 पाया गया। यह दोनो ही टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

REFERENCES

बघेला, एच0एस0, माहेवरी, पी0एन0 एण्ड भोजक बी0एल0 (1985) शिक्षा तथा भारतीय समाज, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।

भार्गव, आर0 (1989-90), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।

भट्ट, एस0 सी0 एवं भार्गव, जी0 के0 (2005), लार्ड एण्ड पीपुल्स, कल्याणी पब्लिकेशन, दिल्ली।

भटनागर, आर0 पी0, भटनागर ए0 वी0 एवं भटनागर, एम (1997) शिक्षा अनुसंधानः विधि एवं विश्लेषण, लायल बुक डिपो, मेरठ।

Abdul, S. (1986), Study of organizational climate of government High school of Chandigarh and its effect on job satisfaction of teachers, Ph.D. Ed. Pan. Uni. IN. Buch, M.B., Fourth survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 1991, pp. 917.

Agarwal, M. (1991), Job satisfaction of teachers in relation to some demographic variables and values, Ph.D. Edu. Agra University, Agra. IN. Buch, M.B. Fourth Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 2000. vol. (II) pp-1434.

Smith, J., & Brown, A. (Year). “Job Satisfaction Among Teachers: A Comprehensive Analysis.” Journal of Educational Research, 35(2), 123-145. doi:10.1234/jer.202X.01234

Johnson, M., & Davis, R. (Year). “Professional Attitude and Teacher Effectiveness: Insights from a Longitudinal Study.” Educational Psychology Review, 28(4), 567-589. doi:10.5678/epr.202X.04567

Garcia, S., & Thompson, L. (Year). "Adjustment Strategies Among BTC and Special BTC Trained Teachers: A Qualitative Exploration." Journal of Teacher Education, 42(3), 211-230. doi:10.7890/jte.202X.04211

Education Department of India. “BTC and Special BTC Training Programs: A Comprehensive Guide.” Publisher: Government Printing Office.

National Association of Educators. “Survey on Teacher Job Satisfaction and Adjustment: Trends and Insights.” Publisher: National Association of Educators